अध्याय–5

शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय – 5

शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1. प्रस्तावना :–

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम् संस्कृतियों में से एक है। इसके साथ संसार में जन्मी अनेक संस्कृतियाँ अब नाम मात्र बन चुकी है। लेकिन भारतीय संस्कृति आज भी पूर्ण प्रभाव से विद्यमान है। इसका कारण यह है कि, भारतीय संस्कृति मूल्य पर आधारित है। यह मूल्य प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था में भी प्रचलित थें। प्राचीन काल में जो गुरूकुल शिक्षा रीति थी उसमें मानक मूल्यों को प्रमुखता दी जाती थी।

आज हमारे नैतिक मूल्य सुबह कुछ होते है और रात को कुछ और हो जाते हैं। ये मूल्य ऐसे ही बदल जाते हैं जैसे कि, तेज हवा के झोंकों से बादलों की दिशा बदल जाती है। मानव के इतिहास से भी पुराने हमारे रीति–रिवाज एवं संस्थाए हमारे देखते ही देखते पिघल जाते हैं, मानों इत्र लगाने अथवा धूम्रपान करने जैसी कोई आदत हो, जिसे जब–तब अपना ली और छोड़ दी। हमारे नैतिक मूल्यों की 'नर्स' और वांछित सामाजिक व्यवस्था की आधारशिला परिवार रूपी संस्था ने आज शहरी औद्योगीकरण एवं व्यक्तिवाद के आगे घूटने टेक दिये हैं।

पाठ्यचर्या विधालय दर्शन की अभिव्यक्ति होती है। इसलिए उसमें ऐसे घटकों का समावेश हो सकता है – जो भौतिक परिवेश, सांगठनिक स्वास्थ्य और मानवीय संबंधों से जुड़े; कतिपय महत्वपूर्ण मूल्यों को जैसे, अनुशासन, स्वच्छता, समयनिष्ठा, लोकतांत्रिक व्यवहार, प्रतिबद्धता, व्यवस्था, शिष्टाचार कायम रखने की जिम्मेदारी, पर्यावरण रक्षा, दूसरों के धर्म के प्रति आदर की भावना, जाति और समुदाय के प्रति सम्मान को प्रतिबिंबित करते हैं।

विद्यालयों के लक्ष्यों का स्पष्ट वर्णन करके कर्मचारियों एव विद्यार्थियों की पहल से अनुशासन विकसित करके, जहाँ जरूरी हो वहाँ शिकायतें दूर करवाने के लिए आदान-प्रदान के तरीके से काम लेकर, कल्याण सेवाओं के द्वारा, जरूरतमंद विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षा और सहायता सुलभ करा कर, विद्योपार्जन से पिछड गए बच्चों को ठुकरा देने की बजाय उनकी कमियों को दूर करके उनका पुनर्मूल्यांकन करके तथा अपनी रूचियों के अनुसार सभी विद्यार्थियों के लिए खेल-कूद अन्य कार्यकलाप और कार्यक्रमों में भाग लेकर सुनिश्चित करने उपयुक्त मूल्यों को प्राप्त किए जा सकते हैं।

वैसे तो नैतिक शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, परन्तु नैतिक शिक्षा की सर्वाधिक आवश्यकता बाल्यकाल एवं किशोरावस्था में होती है। नैतिक शिक्षा बालकों पर थोपी नहीं जा सकती, जैसे न ही उसके लिए आदेश-निर्देश प्रभावी होते हैं। सच्ची नैतिकता तो जीवन के कठिन संघर्षो से प्राप्त होती है। छात्र को नैतिक शिक्षा देने से पूर्व शिक्षक का नैतिकीकरण भी आवश्यक हो जाता है। इस संदर्भ में शोधकर्ता द्वारा इस शोधकार्य को पाठ्यपुस्तक, जो प्राथमिक स्तर की कक्षा 5,6,7 में शामिल है उसका मूल्य संबंधी विषयवस्तु को राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 के मूल्य शिक्षा संबंधी मूल्यों से है। जिसमें शोधकर्ता द्वारा एन.सी.एफ. 2005 में सम्मिलित मूल्यों गुजरात राज्य के प्रारंभिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों में उपलब्ध है या नहीं यह जानना है।

5.2. समस्या कथन :-

प्रारंभिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों में सम्मिलित मूल्य शिक्षा की विषयवस्तु का विश्लेषणात्मक अध्ययन

5.3. अध्ययन का उद्देश्य :–

प्रारंभिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों में सम्मिलित मूल्य शिक्षा की विषयवस्तु का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।

5.4. शोध के उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोधकार्य में निम्नलिखित उदेश्य है :

1. प्रारंभिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों में कक्षा पांचवीं की पाठ्यपुस्तकों कीविषयवस्तु में सम्मिलित मूल्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
2. प्रारंभिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों में कक्षा छठवीं की पाठ्यपुस्तकों कीविषयवस्तु में सम्मिलित मूल्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
3. प्रारंभिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों में कक्षा सातवीं की पाठ्यपुस्तकों कीविषयवस्तु में सम्मिलित मूल्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
4. प्रारंभिक स्तर की कक्षा 5,6 व 7 की पाठ्यपुस्तकों में सम्मिलित मूल्यों के आधार पर छात्रों के वर्तन संबंधित मूल्यों की जानकारी प्राप्त करना।

5.5. शोध प्रविधि :–

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य प्रारंभिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों में मूल्य शिक्षा के विषयवस्तु का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। अतः इस शोधकार्य हेतु अवलोकन प्रणाली का चयन एन.सी.एफ. 2005 में निहित मूल्यों व मूल्य आधारित सुझावों के आधार पर गुजरात राज्य शाला पाठ्य पुस्तक मंडल, गांधीनगर की प्रारंभिक स्तर की कक्षा 5, 6, व 7वीं की पाठ्यपुस्तकों में समाविष्ट मूल्यों का अध्ययन करने के लिए किया गया है।

5.6. न्यादर्श चयन की विधि :-

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा न्यादर्श का चयन गुजरात राज्य के प्रारंभिक स्तर की कक्षा 5, 6 एवं 7वीं की पाठ्यपस्तकों, जो गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, गांधीनगर द्वारा प्रस्तावित हैं उसको सोद्देश्य विधि से लिया गया है और आठ प्राथमिक स्तर की विद्यालयों का चयन विद्यार्थियों में वर्तन संबंधी मूल्यों की जानकारी प्राप्त करने के लिए किया है। गुजरात राज्य के 26 जिलों मे सें अमरेली जिला व अमरेली जिले के 11 तहसील में तीन तहसील जाफराबाद, राजुला व सावर कुंडला का चयन यादृच्छिक प्रविधि द्वारा किया गया। राजुला तहसील से 1 तथा जाफराबाद तहसील में से 6 तथा सावर कुंडला में से 1 प्राथमिक विद्यालय का यादृच्छिक प्रविधि द्वारा चयन किया गया। उन चयनित विद्यालय में अध्ययनरत प्रारंभिक स्तर की कक्षा 5, 6 व 7वीं के विद्यार्थियों का अलिप्त सहभागी निरीक्षण प्रणाली से किया गया है।

5.7. शोध में प्रयुक्त उपकरण :-

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने प्रदत्त संकलन के लिए स्वनिर्मित निरीक्षण सूची की रचना की, जिसको N.C.E.R.T. द्वारा प्रस्तावित तिराशी मूल्यों में से वर्तन विषयक मूल्यों व N.C.F. 2005 के अध्याय 3.8 में शांति व मूल्य के लिए शिक्षा एवं डॉ. नत्थुलाल गुप्त 'अग्रहरि' के 'मूल्यपरक शिक्षा और समाज' (सिद्धांत, प्रयोग एवं प्रविधि) ग्रंथ के आधार से किया गया है। तत्पश्चात् विषय विशेषज्ञों के साथ बैठकर निरीक्षण सूची के विषय में चर्चा की गई। विशेषज्ञों द्वारा दिये गए आवश्यक सुझावों को ध्यान में रखते हुए निरीक्षण सूची का निर्माण किया गया है।

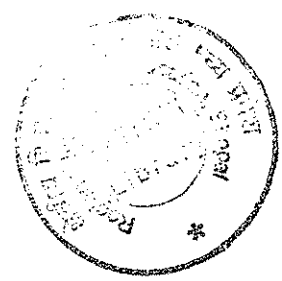

5.8. प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रयुक्त विधि :-

शोध समस्या से सम्बन्धित प्रदत्तों को निरीक्षण प्रविधि द्वारा संकलन करके प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण करने हेतु प्रतिशत प्रणाली का प्रयोग किया गया है।

5.9. निष्कर्ष :-

प्रदत्तों का विश्लेषण, परिणाम तथा व्याख्या उद्देश्यों के संदर्भ में प्राप्त प्रदत्तों के आधार पर किया गया, जिसका निष्कर्ष निम्नानुसार पाया गया है :

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा 2005 में निहित मूल्यों, जो शालेय पाठ्यपुस्तकों में समाविष्ट होने चाहिए; इस संदर्भ में प्रारंभिक स्तर की कक्षा 5,6 व 7वीं की पाठ्यपुस्तकों में समाविष्ट विषयवस्तु का अध्ययन व अवलोकन के आधार पर यह परिणाम प्राप्त हुए कि, कक्षा पाँचवीं में उपलब्ध समग्र मूल्यों समाविष्ट किया गया है। जिसमें सबसे अधिक मूल्यों का समावेश हिन्दी विषय में पाया गया हैं तथा सबसे कम मूल्यों का समावेश गणित विषय में पाया गया है।

कक्षा छठवीं में उपलब्ध समग्र मूल्यों की योग प्रतिशत गणना के परिणाम की प्रतिशत गणना के आधार पर सबसे अधिक मूल्यों का समावेश सामाजिक विज्ञान विषय में पाया गया हैं तथा सबसे कम मूल्यों का समावेश गणित विषय में पाया गया है।

कक्षा सातवीं की सभी पाठ्यपुस्तकों में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा 2005 में निहित मूल्यों का प्रारंभिक स्तर की गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, गांधीनगर द्वारा प्रस्तावित पाठ्यपुस्तकों में उपयुक्त मूल्यों का विश्लेषण किया गया हैं, जिसमें सभी पाठ्यपुस्तकों में वैचारिक स्वातंत्र्य

इस मूल्य को सर्वाधिक पाया गया है तथा धर्म निरपेक्षता इस मूल्य का सबसे कम प्रमाण है।

कक्षा सातवीं में उपलब्ध समग्र मूल्यों की योग प्रतिशत गणना के परिणाम की प्रतिशत गणना के आधार पर सबसे अधिक मूल्यों का समावेश गुजराती विषय में पाया गया है तथा सबसे कम मूल्यों का समावेश गणित विषय में पाया गया है।

समग्र प्राप्त प्रतिशत आधारित परिणाम से यह सहज ही स्पष्ट होता है कि, कक्षा पाँचवीं में कक्षा छठवीं की तुलना में कम और कक्षा सातवीं में कक्षा छठवीं की तुलना में मूल्यों ज्यादा पाये गये हैं।

5.10. प्राप्त परिणाम व निष्कर्ष के आधार पर मूल्यों के विकास संबंधी सूझाव :-

प्रस्तुत शोधकार्य के प्राप्त परिणाम व निष्कर्ष के आधार पर विद्यार्थियों में मूल्य विकास के संदर्भ में विभिन्न घटकों के लिए निम्नानुसार सुझाव दिये जा रहे है :

- ❖ पाठ्यचर्या में विषयवस्तु के चयन में विभिन्न मूल्यों का विकास हो ऐसी विषयवस्तु को बढ़ाना चाहिए।
- ❖ पाठ्यचर्या में मानवीय मूल्यों पर आधारित विषयवस्तुओं में प्रवृत्तिलक्षी एवं विद्यार्थियों द्वारा खुद अनुकरण में लाया जाये, ऐसी प्रवृत्तियों का समावेश मूल्यों के विकास के संदर्भ में करना चाहिए।
- ❖ प्रारंभिक शिक्षा ही समग्र जीवन की नीव समान है इसलिए उसमें मानवीय गुणों का विकास मूल्य संबंधित विषयवस्तु द्वारा अधिकतम हो सकता हैं, अतः पाठ्यचर्या के आधार पर विषयवस्तु को विभिन्न क्षेत्रों

के महापुरूषों के जीवन एवं जीवनियों के आधार पर विकसित करना चाहिए।

- ❖ राष्ट्रीय एवं विविध धामिक त्योहारों के अवसर पर बालमेलों का आयोजन करना चाहिए।
- ❖ विभिन्न क्षेत्रों में बहुप्रतिभावान व्यक्तियों के प्रवचन विद्यालयीन स्तर पर हो ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए।
- ❖ प्रार्थना सभा में तथा अन्य विद्यालयीन दिनचर्चा दरमियान पाठ्यचर्या के साथ-साथ कक्षा के अनुसार शिक्षक द्वारा मूल्यों का परीक्षण प्रवृत्ति या विद्यार्थियों को पता न चले ऐसे बीना कोई दबाव में करना चाहिए।
- ❖ माता-पिता व घर के अन्य पुख्त सदस्य द्वारा ऐसा वर्तन घर के वातावरण में न हो, जिसका असर बालमानस पर पड़े, इसलिए घर में भावनात्मक वातावरण का विकास हो ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए।
- ❖ स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का विकास होता है। इस संदर्भ में बालक के शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए अभिभावकों द्वारा संनिष्ट प्रयास होने चाहिए।
- ❖ मूल्यों का विकास हो ऐसी किताबें घर में रखना चाहिए।
- ❖ घर में, शाला में एवं विविध जाहेर स्थानों पर तथा संग्रहालयों में- सभी धर्मो के संस्थापकों के चित्र लगाने चाहिए।
- ❖ पुस्तकालयों में धार्मिक एवं मानवीय मूल्यों के विकास में वृद्धि कर सके ऐसे व्यक्तित्व विकास लक्षी पुस्तकों की संख्या में वृद्धि करनी चाहिए।
- ❖ कक्षा में पढ़ाते समय शिक्षक द्वारा विविध उदाहरणों में मूल्य विकास लक्षी बातों का ज़िक्र होना चाहिए।

- प्रामाणिक एवं सराहनीय प्रवृत्ति में आगे रहने वाले विद्यार्थियों का सम्मान शाला एवं समाज में खास प्रसंगों या अवसर पर होना चाहिए।
- कक्षा दरमियान एवं विद्यालय में शिक्षक एक आदर्श मिशाल की तरह बने ऐसा शिक्षक का वर्ताव एवं स्वभाव होना चाहिए।
- समाज के आधरभूत संचार साधनों द्वारा मूल्य लक्षी विकास के संदर्भ में विविध भूमिका के आधार पर कार्य होने चाहिए।
- सीनेमा एवं पटचित्रों द्वारा मूल्य विकास का एक सशक्त भावावरण पैदा किया जा सके ऐसे चलचित्र एवं डोक्यूमेंटरी फिल्म बननी चाहिए।
- प्रार्थना सभा में विविध धर्मो की प्रार्थना हो एवं विश्व के महान व्यक्तियों के जीवन संदेश को विद्यार्थियों के समक्ष संक्षिप्त में कहना चाहिए।
- विद्यार्थी खुद अपने जीवन में मूल्यों के आचरण के लिए, विविध व्यक्तित्व विकास लक्षी प्रवृत्तियों एवं क्रियाओं में सहभागी होना चाहिए।
- शिक्षकों को कक्षा में तथा विद्यालय में सभी विद्यार्थियों के प्रति समान भाव रखना चाहिए ताकि, विद्यार्थियों में स्वस्थ मानवीय गुणों का विकास हो।
- विद्यार्थियों में निहित विविध गुणों की पहचान करके शिक्षकों द्वारा उन गुणों के आधार पर विद्यार्थियों को कक्षानुसार कार्य सोंपणी करनी चाहिए।
- पाठ्यचर्या में समाविष्ट विषयवस्तु क्लिष्ट न हो, परन्तु विद्यार्थियों को विचार करने को प्रेरणा दे, ऐसी विषयवस्तु को सम्मिलित करना चाहिए।

- विद्यालय द्वारा विज्ञान मेलों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं अन्य विविधलक्षी प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिलना चाहिए।
- विद्यालय द्वारा शैक्षिक पर्यटन एवं प्रवासयात्रा का आयोजन होना चाहिए।
- विद्यालय की स्वच्छता कायम रखने में शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं अन्य कर्मचारियों द्वारा सनिष्ट प्रयत्न करने चाहिए।
- विद्यार्थी स्वयं अपनी रूचि के अनुसार कार्य करें, ऐसी प्रवृत्ति के लिए शिक्षकों द्वारा प्रोत्साहन मिलना चाहिए।
- विद्यार्थी को स्वयं अपनी स्वच्छता एवं वर्तन विषयक बातों पर ध्यान रखना चाहिए।
- प्रारंभिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों में विषयवस्तु के अनुसार रंगीन चित्रों एवं आकर्षक भाषा शैली का समावेश करना चाहिए।
- नियम के आधीन रखकर विद्यार्थियों को कार्य करवाने की बज़ाय, उनकों विश्वास में लेकर स्नेहपूर्ण एवं सद्भाव से कार्य लेना चाहिए।
- जीवन के प्रति सकारात्मक अभिगम विकसित हो ऐसी बातें शिक्षक द्वारा होनी चाहिए।
- परिवार में अच्छे संस्कारों के वातावरण की व्यवस्था खड़ी करनी चाहिए।
- परिवार में स्नेह तथा वांछित समायोजन के अभाव में माता-पिता और बच्चों के बीच संवाद की कमी को पूर्ण करके स्वस्थ व्यवहारपूर्ण वातावरण खड़ा करना चाहिए।
- परिवार में बालक के सद्व्यवहार के लिए पुरस्कार, समादर तथा यथा स्थान महत्व देना चाहिए।

- परिवार में बालक के चारित्रिक विकास के लिए शारीरिक, मानसिक दण्ड या दमन विहिन वातावरण की रचना करनी चाहिए।
- अपने बालकों के स्वस्थ चारित्रिक विकास के लिए पालकों को भी अपने चरित्र विकास पर ध्यान देना चाहिए।
- विद्यालय के अधिकारियों एवं शिक्षकों को यह करना चाहिए कि, समय-समय पर और नियमित रूप से विद्यार्थियों की प्रगति और आचरण संबंधी प्रतिवेदन से अभिभावकों को भलीभाँति अवगत रखा जाए एवं विद्यार्थियों के निरंतर विकास हेतु पालकों की हर संभव सहायता की जाए।
- सभी विद्यालयों में 'शिक्षक-पालक-संघ' सुचारू रूप से चलाना चाहिए।
- विद्यालय के प्रधानाचार्य को अपने चरित्र एवं व्यवहार को इस प्रकार प्रस्तुत करना चाहिए कि, छात्र-जगत एवं समाज दोनों ही उससे प्रेरणा ग्रहण करें और बदले में उसे उचित सम्मान एवं स्नेह प्रदान करें।
- समाज के लोग स्वयं आगे आकर विद्यालय का कुशल-क्षेम पूछें, हर प्रकार की सहायता करने के लिए तत्पर रहें।
- शिक्षक हमेशा उचित जीवन-दर्शन एवं आदर्शों के अभाव में दिशाहीन एवं असहाय-सा नहीं हो, बल्कि प्रेरणा का स्रोत होना चाहिए।
- विद्यालयी वातावरण एवं पारिवारिक वातावरण में हो सके तब तक समरसता होनी चाहिए, ताकि बालक का संतुलित विकास हो।
- मूल्यपरक शिक्षा के विकास के लिए विद्यालय का वातावरण प्रजातांत्रिक एवं उत्साहवर्धक होना चाहिए।
- विद्यार्थियों को विद्यालय-विकास के लिए स्वच्छता, अनुशासन, व्यवस्था आदि उत्तरदायित्वपूर्ण सौंपे गये कार्य निष्ठा से करने चाहिए।

- कक्षा में स्वस्थ वातावरण रचकर शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों की मौलिक कल्पना–शक्ति, सृजनात्मक प्रतिभा, चिंतन–मनन–अभिव्यंजन आदि का विकास करना चाहिए।

- समाज में कार्यरत् विविध सेवाभावी संस्थाओं तथा व्यक्तियों द्वारा विद्यार्थियों को सेवाकार्य में जुड़कर श्रान्त एवं पीड़ित व्यक्तियों की व्यथा समझ सकें और विद्यार्थियों में उनके प्रति दया, सहानुभूति, करूणा तथा सरोकार की भावना जाग्रत हो ऐसी प्रवृत्तियों में भागीदार बनाना चाहिए।

- पाठ्यचर्या के अन्तर्गत विभिन्न भाषाई, सामाजिक और सांस्कृतिक विशेषताएँ है, उनको सुदृढ़ बनानी चाहिए।

- पाठ्यचर्या में विभिन्न सांस्कृतिक, साहसिक, सेवासंबंधी कार्यकलापों के द्वारा प्रजातंत्र में एक अच्छे, योग्य एवं जागरूक नागरिक के लिए विविध क्षमताओं के विकास को विशेष महत्व दिया जाना चाहिए।

- पाठ्यक्रम के अन्तर्गत सामाजिक अध्ययन, स्वास्थ्य, संगीत, चित्रकला, गृह–अर्थशास्त्र, सांस्कृतिक–सामाजिक परंपराओं आदि का पूर्ण एकीकरण किया जाना चाहिए।

- मूल्यपरक शिक्षा के सफल कार्यान्वयन हेतु वर्तमान पाठ्यक्रम में परिवर्तन करके पाठ्यपुस्तकों में विविध नैतिक मूल्य संबंधी अंशो को बढ़ाना चाहिए।

- पाठ्यपुस्तकों में वय–क्रम के अनुसार नैतिक गुणों के संपूर्ण स्वरूपों पर व्यापक रूप से प्रकाश डालना आवश्यक है।

- पाठ्यपुस्तकों के लेखकों को इस बात पर विशेष ध्यान देना चाहिए कि, पाठ्य का स्वरूप एवं विषयवस्तु विशेष व्यंजनात्मक न हो। इसमें सरल एवं सुग्राह्य भाषा–शैली प्रयुक्त की जानी चाहिए।

- पाठ्यचर्या के आधार पर पाठ्यपुस्तक बच्चों को राष्ट्रीय एवं आंचलिक संत महापुरूषों के जीवन एवं कार्यो की वांछित जानकारी प्राप्त हो इस पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

- शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों में पारंपारिक एवं व्यावहारिक, इन दोनों मूल्यों का समुचित समन्वय करना चाहिए।

- विद्यार्थी को अपने स्वयं के विकास के लिए सहयोग व पारस्परिक सद्भाव, निष्ठा एवं ईमानदारी, अनुशासन एवं सामाजिक उत्तरदायित्व आदि जीवन–मूल्यों को आत्मसात् करना चाहिए।

- शिक्षक द्वारा या अभिभावकों द्वारा विद्यार्थियों में या अपने बालक में सभी धर्मो एवं विश्वासों के प्रति समादर की भावना जाग्रत एवं विकसित करने के लिए उन्हें विविध धर्मो के उपदेशों तथा शिक्षाओं से अवगत कराया जाना चाहिए।

- विद्यार्थी को स्वयं के कर्तव्यों तथा अधिकारों के अवबोध के साथ–साथ दूसरों के अधिकारों के प्रति समादर की भावना के विकास के अनुसार कार्य करने की प्रेरणा और समाज–सेवा आदि की भावना को विकसित करनी चाहिए।

- मूल्यों के आभ्यन्तरीकरण की दृष्टि से स्काउटिंग–गाइडिंग जैसा सरल एवं उपयोगी तथा शीघ्र फलदायक क्रिया–कलाप शायद ही कोई हो। अतः इन क्रिया–कलापों को विद्यालय में अधिकाधिक प्रोत्साहन मिलना चाहिए।

- ❖ शिक्षा आयोग के अनुसार कार्यानुभव को शिक्षा के सभी स्तरों पर अनिवार्य बनाया जाना चाहिए। इसके अंतर्गत समाजोपयोगी उत्पादक कार्य बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें श्रम–गरिमा, समाज–सेवा, समूह–भावना, सहयोग, दूसरों के प्रति सरोकार, कार्यनिष्ठा आदि अनेक नैतिक एवं सामाजिक मूल्य गुम्फित हैं।

- ❖ विद्यार्थियों को स्वयं तथा शिक्षकों द्वारा विविध कलाओं के प्रति अभिरूचि बढ़ानी चाहिए।

- ❖ यौन–शिक्षा के द्वारा विद्यार्थियों में विविध नैतिक मूल्यों का विकास किया जा सकता है। इसमें शिक्षकों के समान ही माता–पिता व अन्य परिवार के बड़े सदस्यों की भूमिका महत्वपूर्ण होनी चाहिए।

- ❖ प्रत्येक विद्यालय में वाचन–कक्ष तथा अन्य भौतिक सुविधाएँ उचित मात्रा में उपलब्ध कराई जायें तथा पुस्तकालय को अधिक उपयोगी बनाने के लिए अभिभावकों का भी सक्रिय सहयोग प्राप्त किया जाना चाहिए।

- ❖ पाठ्यपुस्तकों में इस प्रकार की सामग्री समाविष्ट हो जिससे छात्रों में सत्यपालन, सदाचार, प्रेम, शांति, अहिंसा आदि मानव–मूल्यों का बीजारोपण व विकास सरलतापूर्वक हो सके।

- ❖ मूल्यपरक शिक्षा की संकल्पना से शिक्षकों को अवगत कराने एवं इस ओर उनकी रूचि जागृत करने के लिए शिक्षक–प्रशिक्षण का व्यापक कार्यक्रम चलाया जाना चाहिए।

5.11. भावि शोधकार्य के लिए सूझाव :–

भावि संशोधन कार्य के लिए निम्नलिखित सुझाव दियें जा रहे हैं :

1. प्रारंभिक स्तर की कोई एक कक्षा पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित मूल्यों का अध्ययन किया जा सकता है।

2. प्रारंभिक स्तर के विषय शिक्षकों में मूल्यों के संदर्भ में उपयुक्त मूल्यों के प्रति जागृति का अध्ययन किया जा सकता है।

3. प्रारंभिक स्तर की कक्षा के विद्यार्थियों में मूल्यों के विकास के लिए शिक्षकों की भूमिका का अध्ययन किया जा सकता है।

4. दो राज्य की एक विषय की पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित मूल्यों आधारित विषयवस्तु का विश्लेषण करके तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

5. प्रारंभिक स्तर के शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों में मूल्यों के प्रति जागृति का अध्ययन किया जा सकता है।

6. प्रारंभिक स्तर की विद्यालयों में निरीक्षण व अवलोकन के आधार पर विद्यार्थियों में मूल्यों का विकास– एक विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जा सकता है।